बिहार का प्राकृतिक प्रदेश

- आयताकार, गंगा नदी दोनों भागों में विभाजित करती
- कुल क्षेत्रफल 94163 वर्ग किमी —
  - हिमालय का अंश
  - मैदानी भाग (गंगा)
  - प्रायद्वीपीय पठार (पुराना)
  - छोटानागपुर पठार का अंश

आधार: मिट्टी की प्रकृति, वनस्पति, विभाजित

→ तीन प्रदेश
- उत्तर का शिवालिक श्रेणी एवं तराई प्रदेश
- गंगा का विशाल मैदान
- दक्षिण का सीमांत पठारी प्रदेश

उत्तर का शिवालिक श्रेणी एवं तराई प्रदेश

(74 km) — सोमेश्वर पहाड़ी, भिखना ठोरी, मरवा पहाड़ी

- पश्चिमी चम्पारण
- 3 संकीर्ण अनुदैर्ध्य घाटी — सोमेश्वर, हरहा घाटी, रामनगर दून
- मुलायम बलुआ पत्थर चट्टानों की बहुलता
- यह प्रदेश उबड़-खाबड़ है

गंगा का मैदान

(उत्तरी, दक्षिणी)

- यह 90650 वर्ग किमी
- कुल क्षेत्रफल का 95%
- यह एक समतल है
- उर्वरता सर्वाधिक है

भाबर, तराई, बांगर, खादर, चौर

उत्तरी गंगा का मैदान

- नदियों द्वारा परिवहन एवं विसर्पाकार गोखुर झील और चौर भी पाए जाते हैं
- औसत ऊँचाई 75 m से कम

← उप तराई क्षेत्र, भांगर क्षेत्र, खादर क्षेत्र और एवं मन में विभाजित

उप तराई प्रदेश या भावर ~~क्षेत्र~~ प्रदेश (बिहार के 7 जिलों में एक संकीर्ण पट्टी के रूप में पश्चिम एवं फैला हुआ है। यह एक सपाट आर्द्र क्षेत्र है जहाँ 10 किमी चौड़ा क्षेत्र में कंकड बालू का निक्षेप पाया जाता है।

बांगर क्षेत्र पुराना जलोढ़ का क्षेत्र है इसमें 6-7 m ऊँची टीलों की ऊँचाई रहे है इसमें प्रतिवर्ष बाढ़ नहीं आती है। खादर भूमि नया जलोढ़ क्षेत्र है जो गंडक नदी और कोसी नदी के मध्य स्थित है यहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ के आने से मिट्टियाँ उपजाऊ हो गई है। परिणामतः जनसंख्या का बसाव भी अधिक हुआ है।

उत्तरी मैदान में जलमग्न निम्न भूमि भी पायी जाती है जिसे चौर या मन कहा जाता है। यह चौर प्राकृतिक अपवाहों के परिणामस्वरूप निर्मित निम्न भूमि है यहाँ वर्षा जल लगातार जमा होता रहता है। इनमें पश्चिमी चम्पारण का लखनी चौर, पूर्वी चम्पारण का बहादुरपुर एवं कुंदरपुर चौर प्रमुख है। यहाँ मन या गोखुर झील है जो नदियों के मार्ग परिवर्तन से बने है। यह झील पानी के विशाल एवं गहरे स्रोत है। पूर्वी चम्पारण का टेटरियामन, माधोपुर मन एवं पश्चिमी चम्पारण का पिपरा मन, सिमरी मन, अरैया मन प्रमुख है। यहाँ मत्स्य

पालन होता है।

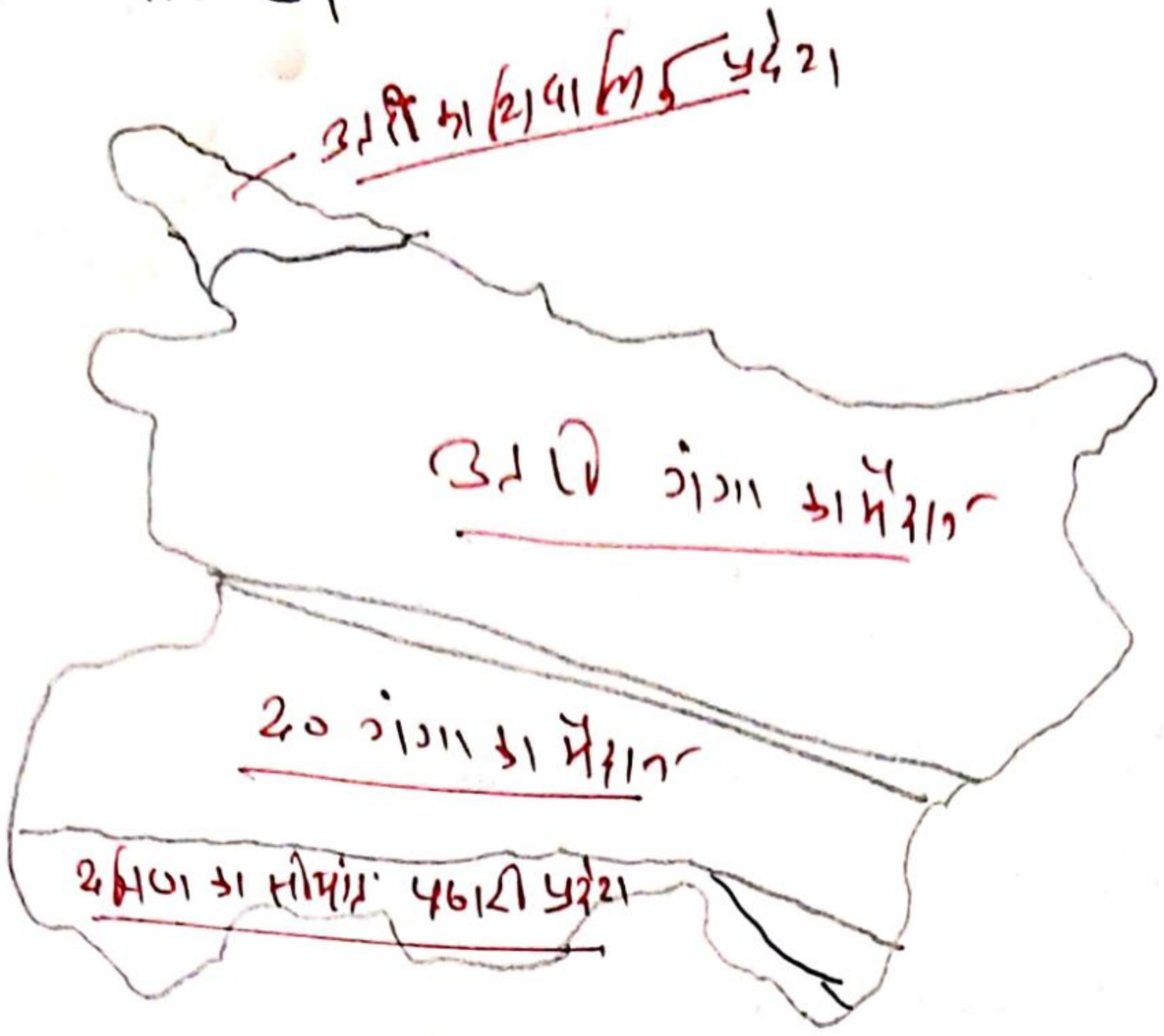

दक्षिण गंगा का मैदान – यह पठारी नदियों द्वारा वाहित जलोढ़ मिट्टियों के निक्षेपण से बना है। यह पश्चिम में अधिक चौड़ा और पूर्व में कम चौड़ा है। इस भाग में गंगा प्राकृतिक कगार का निर्माण करती है। इस कारण इस क्षेत्र में बहने वाली अधिकांश छोटी नदियाँ पुनपुन, फल्गु, किउल आदि समानांतर प्रवाहित होकर 'पीनेट प्रवाह प्रणाली' का निर्माण करती है। इस प्राकृतिक कगार के दक्षिण में कुछ जलमग्न निम्न भूमि है जिसे टाल क्षेत्र या जलमग्न क्षेत्र कहा जाता है। पटना से जमालपुर तो लखीसराय एवं मोकामा टाल, मोर टाल प्रमुख है। इस क्षेत्र में भूमि का ढाल उत्तर की ओर है। चूंकि यहाँ जलवाहित नदियाँ कम है इस कारण यहाँ मोटा बालू

की प्रधानता ~~है~~ पायी जाती है। सोन, पुनपुन और फल्गु के बालू तो भवन निर्माण के लिए काफी उपयुक्त है।

2.0 का सीमांत पठारी प्रदेश

यह भाग गया से मुंगेर तक फैला हुआ है जहाँ चट्टानें युक्त पीठ के रूप में विस्तारित है। यह भाग तीव्र ढाल वाली घाटियाँ, समतल ~~पठारी भाग~~ सक्रिय घाटियाँ एवं एक विराम धरातल से युक्त पठारी प्रदेश है जिसमें नीस, शिस्ट एवं ग्रेनाइट चट्टानों की अधिकता है। यहाँ 150-300 m ऊँचे उबड़-खाबड़ धरातल पायी जाती है। भौगोलिक दृष्टि से भी यहाँ की शाखाकार पहाड़ियाँ यथा खड़गपुर, राजगीर और गिरियक की पहाड़ियाँ भी पायी जाती है। यह प्रदेश छोटानागपुर पठार का ही भाग है। जो खनिजों से युक्त भाग माना जाता है।